UP Board Important Questions Class 12 Chapter 3 सामाजिक संस्थाएँ – निरंतरता एवं परिवर्तन (Bhartiya Samaj)

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1.
सत्यशोधक समाज की स्थापना कब और किसने की थी?
उत्तर:
सत्यशोधक समाज की स्थापना सन् 1873 में ज्योतिराव गोविन्दराव फुले ने की थी।

प्रश्न 2.
वैदिक काल में जाति व्यवस्था का स्वरूप क्या था?
उत्तर:
वर्ण-व्यवस्था।

प्रश्न 3.
भारत में जनगणना का शुभारंभ कब से हुआ?
उत्तर:
1860 ई. के दशक से।

प्रश्न 4.
भारत में नियमित रूप से जनगणना के कार्य की शुरूआत कब से हुई?
उत्तर:
सन् 1881 से।

प्रश्न 5.
1901 ई. में हरबर्ट रिजले के जनगणना कार्य को महत्त्वपूर्ण क्यों माना जाता है ?
उत्तर:
जाति के सामाजिक अधिक्रम की जानकारी एकत्रित किये जाने के कारण।

प्रश्न 6.
19वीं सदी में जाति के विरुद्ध आंदोलन करने वाले दक्षिण भारत के दो समाज सुधारकों के नाम लिखिये।
उत्तर:

1. पेरियार,
2. नारायण गुरु।

प्रश्न 7.
19वीं सदी में जाति के विरुद्ध आंदोलन करने वाले पश्चिम भारत के एक समाज सुधारक का नाम लिखिये।
उत्तर:
महात्मा ज्योतिराव फुले।

प्रश्न 8.
सन् 1920 के दशक में अस्पृश्यता के विरुद्ध आंदोलन की शुरूआत किसने की थी?
उत्तर:
महात्मा गांधी और बाबा साहेब अम्बेडकर ने।

प्रश्न 9.
'द रिमेम्बर्ड विलेज' किस विचारक की पुस्तक है?
उत्तर:
श्री एम.एन. श्रीनिवासन की।

प्रश्न 10.
सन् 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में जनजातियों की जनसंख्या कितनी है ?
उत्तर:
10.4 करोड़ व्यक्ति।

प्रश्न 11.
जाति के निर्धारण का आधार क्या है?
उत्तर:
जन्म।

प्रश्न 12.
सैद्धान्तिक तौर पर जाति व्यवस्था को किन दो सिद्धान्तों के समुच्चय के रूप में समझा जा सकता है?
उत्तर:

1. भिन्नता और अलगाव के आधार पर,
2. सम्पूर्णता और अधिक्रम के आधार पर।

प्रश्न 13.
कर्मकांडीय दृष्टि से जाति की अधिक्रमित व्यवस्था किसके अन्तर पर आधारित होती है?
उत्तर:
शुद्धता और अशुद्धता के बीच के अन्तर पर।

प्रश्न 14.
भारत के औपनिवेशिक काल की अवधि क्या मानी जाती है?
उत्तर:
1800 से 1947 तक की अवधि भारत के औपनिवेशिक काल की अवधि मानी जाती है।

https://www.evidyarthi.in/

प्रश्न 15.
'संस्कृतिकरण' और 'प्रबल जाति' की संकल्पनाएँ किस विद्वान की देन हैं ?
उत्तर:
एम.एन. श्रीनिवासन की।

प्रश्न 16.
पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में प्रबल जाति कौन सी है?
उत्तर:
जाट जाति।

प्रश्न 17.
आंध्रप्रदेश की दो प्रबल जातियों के नाम लिखो।
उत्तर:

1. रेड्डी और
2. खम्मा।

प्रश्न 18.
मध्य भारत में जनजातीय जनसंख्या का कितने प्रतिशत भाग रहता है?
उत्तर:
लगभग 85 प्रतिशत भाग।

प्रश्न 19.
किन राज्यों में जनजातियों की आबादी सबसे घनी है?
उत्तर:
पूर्वोत्तर भारत के राज्यों में।

प्रश्न 20.
60 प्रतिशत से अधिक जनजातीय आबादी वाले किन्हीं दो राज्यों के नाम लिखिये।
उत्तर:

1. अरुणाचल प्रदेश,
2. मेघालय।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1.
जाति शब्द से आपका क्या आशय है?
उत्तर:
जाति एक व्यापक शब्द है जो किसी भी चीज के प्रकार या वंश-किस्म को संबोधित करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। इसमें अचेतन वस्तुओं से लेकर पेड़-पौधों, जीव-जन्तु और मनुष्य भी शामिल हैं।

प्रश्न 2.
वर्ण और जाति में दो अन्तर बताइये।
उत्तर:

1. वर्ण का निर्धारण व्यक्ति के कर्म से होता था जिसे बदला जा सकता था जबकि जाति का निर्धारण जन्म से होता है जिसे बदला नहीं जा सकता।
2. वर्गों की संख्या चार है जबकि जातियाँ-उपजातियाँ सैकड़ों हैं।

प्रश्न 3.
प्रबल जाति (डोमिनेंट कास्ट) शब्द का प्रयोग किसके लिए किया जाता है?
उत्तर:
प्रबल जाति वस्तुतः जाति व्यवस्था के पद सोपान क्रम में कोई मध्यम या उच्च मध्यम वर्गीय जाति होती है जिसकी जनसंख्या अत्यधिक हो तथा जिसके पास भूमि-स्वामित्व के अधिकार हों।

प्रश्न 4.
सामाजिक संरचना से आप क्या समझते हैं?
उत्तर:
सामाजिक संरचना व्यक्तियों के सम्बन्धों की वह सतत् व्यवस्था है जिसे सामाजिक रूप से स्थापित व्यवहार के प्रतिमान के रूप में सामाजिक संस्थाओं तथा संस्कृति के जरिए परिभाषित तथा नियंत्रित किया जाता है।

प्रश्न 5.
परसंस्कृतिकरण क्या है ?
उत्तर:
जब एक प्रभावी समूह अपनी संस्कृति का प्रभाव अपने अधीनस्थ समूह पर इस प्रकार डालता है कि अधीनस्थ समूह का अस्तित्व प्रभावी संस्कृति में घुल-मिल जाता है, तो इस प्रक्रिया को परसंस्कृतिकरण कहते हैं।

प्रश्न 6.
जाति की दो विशेषताएँ लिखिये।
उत्तर:

1. जाति जन्म से निर्धारित होती है। हम अपनी जाति को कभी भी बदल या छोड नहीं सकते।
2. जाति की सदस्यता के साथ विवाह सम्बन्धी कठोर नियम शामिल होते हैं तथा जाति एक अन्तर्विवाही संस्था है।

प्रश्न 7.
सैद्धान्तिक तौर पर जाति व्यवस्था को किस रूप में समझा जा सकता है?
उत्तर:
सैद्धान्तिक तौर पर जाति व्यवस्था को सिद्धान्तों के दो समुच्चय के मिश्रण के रूप में समझा जा सकता है-
(1) भिन्नता और अलगाव पर आधारित समुच्चय, (2) संपूर्णता और अधिक्रम पर आधारित समुच्चय।।

https://www.evidyarthi.in/

प्रश्न 8.
भिन्नता और अलगाव के सिद्धान्त के आधार पर जाति व्यवस्था की विशेषता को स्पष्ट कीजिये।
उत्तर:
भिन्नता और अलगाव के सिद्धान्त के अनुसार हर जाति से यह अपेक्षित है कि वह दूसरी जाति से भिन्न हो और इसलिए वह प्रत्येक अन्य जाति से कठोरता से पृथक होती है। उसे अन्य जाति से अलग रखने हेतु शादी, खान-पान, सामाजिक अंतःक्रिया और व्यवसाय के नियम बनाए गये हैं।

प्रश्न 9.
संपूर्णता और अधिक्रम के सिद्धान्त के आधार पर जाति व्यवस्था को स्पष्ट कीजिये।
उत्तर:
संपूर्णता और अधिक्रम के सिद्धान्त के अनुसार इन विभिन्न एवं पृथक जातियों का कोई व्यक्तिगत अस्तित्व नहीं है, वे एक बड़ी सम्पूर्णता से संबंधित होकर ही अपना अस्तित्व बनाए रख सकती हैं। साथ ही प्रत्येक जाति का समाज में एक विशिष्ट स्थान है तथा एक श्रेणी क्रम में स्थित है।

प्रश्न 10.
कर्मकांडीय दृष्टि से जाति की अधिक्रमित व्यवस्था किस पर और कैसे आधारित होती है ?
उत्तर:
कर्मकांडीय दृष्टि से जाति की अधिक्रमित व्यवस्था 'शुद्धता' और 'अशुद्धता' के बीच के अन्तर पर आधारित होती है। वे जातियाँ जिन्हें कर्मकांड की दृष्टि से शुद्ध माना जाता है, उनका उच्च स्थान होता है और जिनको कम शुद्ध या अशुद्ध माना जाता है, उन्हें निम्न स्थान दिया जाता है।

प्रश्न 11.
खण्डात्मक संगठन से आपका क्या तात्पर्य है ?
उत्तर:
जातियों में आपसी उप-विभाजन भी होता है अर्थात् जातियों में हमेशा उप-जातियाँ होती हैं और कभी-कभी उप-जातियों में भी उप-उप-जातियाँ होती हैं । इसे खण्डात्मक संगठन कहते हैं।

प्रश्न 12.
1935 के अधिनियम में अनुसूचित जातियों की श्रेणी में किन जातियों को शामिल किया गया?
उत्तर:
जातीय अधिक्रम में जो जातियाँ सबसे नीची थीं जिनके साथ सबसे अधिक भेदभाव बरता जाता था और जिनमें सभी दलित जातियाँ थीं, उन्हें 1935 के अधिनियम में अनुसूचित जातियों की श्रेणी में शामिल किया गया।

प्रश्न 13.
अयनकल्ली कौन थे?
उत्तर:
अयन्कल्ली केरल में जन्मे निम्न जातियों एवं दलितों के नेता थे। इनके प्रयासों से, दलितों को सार्वजनिक सड़कों पर चलने की और अपने बच्चों को विद्यालयों में दाखिला दिलाने की आजादी मिली।

प्रश्न 14.
ज्योतिराव गोविन्दराव फुले कौन थे?
उत्तर:

ज्योतिराव गोविन्दराव फुले ने जाति व्यवस्था के अन्याय तथा छुआछूत के नियमों की भर्त्सना की। 1873 में आपने 'सत्य शोधक समाज' की स्थापना की जो निम्न जाति के लोगों के मानवाधिकारों और सामाजिक न्याय की प्राप्ति के लिए समर्पित था।

प्रश्न 15.
पेरियार कौन थे?
उत्तर:
पेरियार अर्थात् ई.वी. रामास्वामी नायकर एक बुद्धिजीवी और दक्षिण भारत में निम्न जाति आंदोलन के रूप में जाने जाते हैं।

प्रश्न 16.
नारायण गुरु के बारे में आप क्या जानते हैं ?
उत्तर:
केरल में जन्मे नारायण गुरु ने जाति व्यवस्था के कुप्रभावों के विरुद्ध संघर्ष किया। उन्होंने एक शांतिपूर्ण लेकिन सार्थक सामाजिक क्रांति का नेतृत्व किया तथा सबके लिए एक जाति, एक धर्म और एक ईश्वर का नारा दिया।

प्रश्न 17.
संस्कृतिकरण की अवधारणा का क्या तात्पर्य है? ।
उत्तर:
संस्कृतिकरण - संस्कृतिकरण एक ऐसी प्रक्रिया का नाम है जिनके द्वारा किसी मध्य या निम्न जाति के सदस्य किसी उच्च जाति की धार्मिक क्रियाओं, घरेलू या सामाजिक परम्पराओं को अपनाकर अपनी सामाजिक प्रस्थिति को ऊँचा करने का प्रयत्न करते हैं।

प्रश्न 18.
जनजातीय समाजों का वर्गीकरण किसके अनुसार किया जाता है ?
उत्तर:
जनजातीय समाजों का वर्गीकरण उनके स्थायी तथा अर्जित विशेषकों के अनुसार किया जाता है। स्थायी विशेषकों (लक्षणों) में क्षेत्र, भाषा, शारीरिक विशिष्टताएँ और पारिस्थितिक आवास शामिल हैं।

प्रश्न 19.
भाषा की दृष्टि से जनजातियों को कितनी श्रेणियों में विभाजित किया गया है ?
उत्तर:
भाषा की दृष्टि से जनजातियों को चार श्रेणियों में विभाजित किया गया है:

1. भारतीय आर्य परिवार की भाषा बोलने वाली जनजातीय जनसंख्या,
2. द्रविड़ परिवार की भाषा-भाषी जनजातियाँ,
3. आस्ट्रिक परिवार की भाषा-भाषी जनजातियाँ तथा
4. तिब्बती-बर्मी परिवार की भाषा-भाषी जनजातियाँ।

प्रश्न 20.
आजीविका के आधार पर जनजातियों को कितनी श्रेणियों में बाँटा जा सकता है?
उत्तर:

https://www.evidyarthi.in/

आजीविका के आधार पर, जनजातियों को मछुआ, खाद्य संग्राहक, आखेटक, झूम खेती करने वाले, कृषक, बागान तथा औद्योगिक कामगारों की श्रेणियों में बाँटा जा सकता है।

प्रश्न 21.
"जनजातियाँ जाति आधारित हिन्दू कृषक समाज के एक सिरे का विस्तार है।"
कथन को स्पष्ट कीजिए।
उत्तर:
कुछ विद्वानों का मत है कि जनजातियाँ जाति आधारित हिन्दू कृषक समाज से मौलिक रूप से भिन्न नहीं हैं, लेकिन उनमें स्तरीकरण बहुत कम हुआ है और संसाधनों के स्वामित्व के मामले में वे समुदाय आधारित अधिक हैं।

प्रश्न 22.
"जनजातियाँ पूर्ण रूप से जातियों से भिन्न प्रकार का समुदाय है।" इस कथन के पक्ष में क्या तर्क दिया जाता है?
उत्तर:
जनजातियाँ जातियों से पूरी तरह से भिन्न होती हैं क्योंकि उनमें धार्मिक या कर्मकांडीय दृष्टि से शुद्धता और अशुद्धता का भाव नहीं होता जो कि जाति-व्यवस्था का केन्द्र-बिन्दु है।

प्रश्न 23.
सैद्धान्तिक तौर पर जाति व्यवस्था को किस रूप में समझा जा सकता है?
उत्तर:
सैद्धान्तिक तौर पर जाति व्यवस्था को सिद्धान्तों के दो समुच्चयों के मिश्रण के रूप में समझा जा सकता है- एक भिन्नता और अलगाव पर आधारित है और दूसरा सम्पूर्णता और अधिक्रम पर।

प्रश्न 24.
जनजातियों के पृथक्करणवादियों का क्या तर्क है ?
उत्तर:
जनजातियों के पृथकतावादी पक्ष का कहना था कि जनजातीय लोगों को व्यापारियों, साहूकारों और हिन्दू तथा ईसाई धर्म प्रचारकों से बचाए रखने की आवश्यकता है क्योंकि ये लोग जनजातियों का अलग अस्तित्व मिटाकर उन्हें भूमिहीन श्रमिक बनाना चाहते हैं।

प्रश्न 25.
जनजातियों के सम्बन्ध में एकीकरणवादियों का क्या तर्क है ?
उत्तर:
एकीकरणवादियों का कहना है कि जनजातीय लोग पिछड़े हुए हिन्दू ही हैं और उनकी समस्याओं का समाधान उसी परिधि के भीतर खोजा जाए जो अन्य पिछड़े वर्गों के मामले में निर्धारित की गई है।
प्रश्न 26.
किन दो मुद्दों ने जनजातीय आंदोलनों को तूल देने में सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी?
उत्तर:
जिन दो मुद्दों ने जनजातीय आंदोलनों को तूल देने में सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है, वे ये हैं

1. वे मुद्दे जो भूमि तथा वनों जैसे आर्थिक संसाधनों से संबंधित हैं,
2. वे मुद्दे जिनका सम्बन्ध नृजातीयसांस्कृतिक पहचान के मामलों से है।